IB DIPLOMA PROGRAMME
PROGRAMME DU DIPLÔME DU BI
PROGRAMA DEL DIPLOMA DEL BI

HINDI A1 – STANDARD LEVEL – PAPER 1
HINDI A1 – NIVEAU MOYEN – ÉPREUVE 1
HINDI A1 – NIVEL MEDIO – PRUEBA 1

Monday 10 May 2004 (afternoon)
Lundi 10 mai 2004 (après-midi)
Lunes 10 de mayo de 2004 (tarde)

1 hour 30 minutes / 1 heure 30 minutes / 1 hora 30 minutos

INSTRUCTIONS TO CANDIDATES

- Do not open this examination paper until instructed to do so.
- Write a commentary on one passage only. It is not compulsory for you to respond directly to the guiding questions provided. However, you may use them if you wish.

INSTRUCTIONS DESTINÉES AUX CANDIDATS

- N'ouvrez pas cette épreuve avant d'y être autorisé(e).
- Rédigez un commentaire sur un seul des passages. Le commentaire ne doit pas nécessairement répondre aux questions d'orientation fournies. Vous pouvez toutefois les utiliser si vous le désirez.

INSTRUCCIONES PARA LOS ALUMNOS

- No abra esta prueba hasta que se lo autoricen.
- Escriba un comentario sobre un solo fragmento. No es obligatorio responder directamente a las preguntas que se ofrecen a modo de guía. Sin embargo, puede usarlas si lo desea.

नीचे दो उद्धरण दिए गए हैं, (क) तथा (ख)। इन दोनों में से किसी एक पर व्याख्या लिखिए।

(क)

गौरांगना को कल्याणकारी स्वयंसेवी संस्था में आये छः मास गुजर चुके थे। लगन, परिश्रम से तालीम सीख रही थी। सुखराम भी खुश थे। किशोरी ने जल्दी ही सीख लिया। एक दिन ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन तो हुआ तो सुखराम ने कहा "तुम्हें भी हिस्सा लेना है। इसमें पास हो जाओगी तो विदेश में जाने का मौका मिलेगा।" गौरांगना सहर्ष तैयार हो गयी और तैयारी में लग गयी।

१५ अगस्त को कला मंदिर में प्रतियोगिता का आयोजन रखा गया। गौरांगना सादे लिबास में सुखराम के साथ गयी और प्रतियोगिता में हिस्सा लिया। रिजल्ट उसी दिन आना था। इसलिए दोनों को रुकना पड़ा। सभी प्रतियोगियों के नाम लिए गए। प्रथम इनाम गौरांगना को मिला। सुखराम की खुशी का ठिकाना नहीं रहा और दौड़ कर उसके माथे को चूम लिया। गौरांगना लज्जा गई और निगाहें नीचे कर लीं।

इस तरह गौरांगना की जीवन दिशा को सुखराम ने बिलकुल बदल दिया और उसके विदेश जाने की तैयारी करने लगा। इसी बीच सुखराम के पिता दीवानचन्द जी ने कहा –" बेटा तुम्हारी निस्वार्थ सेवा देखकर समाज को नयी दिशा जरूर मिलेगी। लेकिन अपनी जीवन दिशा में भी तबदीली लाओ। गृहस्थ जीवन बसाने की सोचो, चौबीस बसंत पार कर चुके हो। जहाँ भी इच्छा हो बता दो।"

"पिताजी जैसी आपकी इच्छा।आप जानते हैं मेरा कर्म ही समाज सुधार का है तो मेहरबानी करके गौरांगना को अपने जीवन में लाना चाहता हूँ। सुशील कन्या है। बस जौहरबाई से इजाजत दिलवा दें। तभी मैं भी इनके साथ विदेश चला जाऊँगा," सुखराम ने कहा। दीवानचन्द पुत्र की इच्छा देखकर खुश हुए कि कथनी और करनी में अन्तर नहीं है। नारी का उद्धार करना हमारी सभ्यता-संस्कृति का धर्म है।क्योंकि नारी घर की शांति है, तो पूंजी भी। नारी को अच्छा घर-वर मिल जाये तो जीवन दिशा ही बदल जाती है। इसलिए उन्होंने स्वीकृति दे दी लेकिन सुखराम के दादा रूपचन्द ने सुना कि पोता तवायफ से विवाह कर रहा है तो भड़क उठे। विवाद खड़ा कर दिया। लेकिन दीवानचन्द ने पिता की जगह बेटे के भविष्य की चिन्ता की और पंडित को बुलाने का आदेश दिया। जौहर बाई ने सुना तो खुश हुई कि बेटी का जीवन संवारने वाला साथी मिल गया। उस्ताद जी का इंतकाल हो चुका था। लेकिन उनकी तस्वीर के सामने जौहर बाई ने कहा –" उस्ताद जी तुम्हारी इच्छा पूरी हो गयी। आज मैं लाडो का निकाह करने जा रही हूँ।"

इस तरह पूनम की साँझ को सुखराम और गौराँगना एक दूसरे के दाम्पत्य जीवन में बंध गये। गौराँगना को नया जीवन मिला। खुश थी। सुखराम जैसा नेक पुरुष उसके जीवन में आया और जीवन को नयी राह पर चलना सिखाया यह सबसे बड़ी उपलब्धि थी।

'उपहार' *"ज़ाफरानी हवा"* करुणा श्री (श्री वास्तव)2002

- इस गद्य के विषयवस्तु द्वारा लेखिका ने क्या कहने का प्रयास किया है ?

- लेखिका की भाषा और शैली पर विचार-विमर्श करते हुए बताएं कि क्या वह अपनी बात प्रभावशाली ढंग से कह पाई है ?

- दीवानचन्द तथा रूपचन्द तथा और पात्रों के चरित्र चित्रण द्वारा प्रस्तुत की गई उनकी विचारधारा के बारे में आप क्या कहना चाहते हैं ?

- इस गद्य के विषयवस्तु ने आप के मन पर क्या प्रभाव डाला ?

(ख)

कांप–कांप जाए रे जियरा

मायके से डोली निकले
अर्थी निकले ससुराल से
कांप–कांप जाए रे जियरा
बिटिया के हाल से
मायके से डोली निकले

दानवी दहेज प्रथा पर,क्यों समाज मौनी है,
क्यों नहीं बदलते उसको, जो प्रथा घिनौनी है।
बंद नहीं होती मौतें, रोज़ की अनहौनी है,
रोज़ की अनहौनी बहना रोज़ की अनहौनी है।
लाश ही मिली है, हमें आके, अस्पताल से।

आंसू ये न पुंछ पाएंगे,
किसी भी रूमाल से।
कांप–कांप जाए रे जियरा
बिटिया के हाल से

मायके से डोली निकले
अर्थी निकले ससुराल से

***"खिड़कियां"* अशोक चकधर २००२**

- कविता का केन्द्रीय भाव को कवि कहाँ तक प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत कर पाया है ?
- कवि ने कविता के विषयवस्तु के संदर्भ में समाज पर कैसी चोट लगाई है ?
- कविता की भाषा, शैली तथा प्रस्तुतीकरण के बारे में आप क्या कहना चाहते हैं।
- इस कविता के विषयवस्तु ने आपके मन पर क्या प्रभाव डाला ?